IJAER/ Jan-Feb 2023/Volume-12/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

आधुनिक युग के हिन्दी और अंग्रेजी के उपन्यास

अपराजिता शांडिल्य
शोधार्थी कलिंगा विश्वविद्यालय नया रायपुर

डॉ अजय कुमार शुक्ल
प्राध्यापक हिन्दी कलिंगा विश्वविद्यालय नया रायपुर

सार

आधुनिक युग के हिन्दी और अंग्रेजी के उपन्यास इस युग की मानवीय अनुभूतियों और समस्याओं को प्रकट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आजकल, विभिन्न लेखक और लेखिकाएं हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपन्यास लिखते हैं। इससे भाषाई समृद्धि होती है और साहित्यिक रचनाओं की विभिन्न परंपराओं को मिलाने का मौका मिलता है। यह एक सामरिक विकास है जो भारतीय साहित्य को विश्व साहित्य के साथ मेलजोल प्रदान करता है। अंततः, आधुनिक युग में हिन्दी और अंग्रेजी के उपन्यासों का इतिहास एक योगदान है जो हमें सामाजिक, मानसिक, और सांस्कृतिक परिवर्तनों को समझने में मदद करता है। यह उपन्यास हमें आधुनिकता, व्यक्तित्व, और समाज के मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता प्रदान करते हैं और हमें अपनी समस्याओं और स्थितियों को एक नये दृष्टिकोण से देखने का अवसर देते हैं।

मुख्य शब्दरू

परिचय

प्रेमचंद के उपन्यासों का परिचय प्रेमचंद का पहला उपन्यास श्असरारे मुआबिद उर्फ देवस्थान रहस्यश 08 अक्टूबर 1903 से 01 फरवरी 1905 तक बनारस के उर्दू साप्ताहिक श्आवाज खल्कश में क्रमशः प्रकाशित हुआ । इस उपन्यास में धार्मिक स्थानों में व्याप्त विलासिता एवं पाखण्डों का पर्दाफाश किया गया है। इसके उपरान्त उनके श्प्रेमाश, श्किशनाश और 'रूठी रानीश नामक छोटे–छोटे उपन्यास प्रकाशित हुए । इसके पश्चात प्रेमचंद उर्दू के साथ–साथ हिन्दी में भी लिखने लगे और श्सेवा सदनश से शुरू हुई उपन्यास यात्रा श्गोदानश पर समाप्त हुई। इस बीच अनेक महत्वपूर्ण उपन्यासों की रचना की । उनके उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है

सेवासदन

सेवासदन 1918 के लगभग प्रकाशित हुआ । इसमें नारी जीवन से सम्बन्धित कई समस्याओं को उठाया गया हैं। प्रेमचंद ने इस उपन्यास में दर्शाया है कि दहेज के अभाव में अनमेल विवाह होता है और अनमेल विवाह के परिणामस्वरूप नारी का जीवन त्रासद हो जाता है। उन्होंने यह भी स्पष्ट

किया है कि पति द्वारा त्यागी गई स्त्री के लिये हमारे तथाकथित सभ्य समाज में कोई स्थान नहीं है और उसे विवश होकर वेश्या जीवन स्वीकार करना पड़ता है। इस उपन्यास में प्रेमचंद ने वेश्याओं की स्थिति पर बहुत ही सहानुभूति पूर्ण ढंग से विचार किया है और इसके लियें समाज की भ्रष्ट व्यवस्था को जिम्मेदार माना है।

प्रेमाश्रम – प्रेमाश्रम 1921 में प्रकाशित हुआ । इस उपन्यास के रचनाकाल से पूर्व रूस में क्रान्ति हो चुकी थी। किसानों और मजदूरों की सत्ता का सपना साकार हो चुका था लेकिन भारत में किसानों की दशा दिन प्रतिदिन बदतर होती जा रही थी । प्रेमचंद ने किसान जीवन को आधार बनाकर इस औपन्यासिक कृति की रचना की । वास्तव में किसान जीवन पर यह हिन्दी का पहला उपल्यास है । इसमें प्रेमचंद ने जमीदार तथा किसानों के संघर्ष को दिखाया है। किसानों के ऊपर होने वाले अन्याय, अत्याचार, और शोषण की जीवन्त दास्तान प्रस्तुत की है। जमीदारों के साथ – साथ सरकार भी किसानों का खून चूसती है। वास्तव में भारतीय किसान एक दुधारू गाय है जो सबसे दुही जाती है ।

उद्देश्य

1. आधुनिक हिंदी और अंग्रेजी की पृष्ठभूमि का अध्ययन करना
2. आधुनिक हिंदी और अंग्रेजी उपन्यास के बदलते स्वरुप की चर्चा

रंगभूमि

1924–25 में प्रकाषित श्रंगभूमिश उपन्यास प्रेमचंद का आकार की दृष्टि से सबसे बड़ा उपन्यास है। यह उपन्यास असहयोग आंदोलन के दौरान लिखा गया था, इसका प्रभाव उपन्यास में सर्वत्र दिखाई देता है। इस उपन्यास पर गँधीवाद का भी व्यापक प्रभाव परिलक्षित होता है। इस उपन्यास में दलितों एवं गरीबों का विस्तार से चित्रण है । इस उपन्यास का नायक सूरदास दलित है । उसमे गजब का जीवट है। वह बाधाओं से मुँह नहीं मोड़ता बल्कि संघर्ष करता रहता है। इस उपन्यास में पूंजीपति एवं सामंतो के शोषण, अन्याय और अत्याचार के वास्तविक चित्र हैं। इसमें ग्रामीण जीवन की सरलता, आत्मीयता तथा स्वच्छता के स्थान पर औद्योगिक सभ्यता की विद्रूपता और जटिलता का उल्लेख है । औद्योगिक शोषण,राजनीतिक पराधीनता और वर्ग– संघर्ष से ओत–प्रोत इस उपन्यास में भारतीय जन–जीवन के अनेक पक्ष दिखाए गए हैं।

कायाकल्प–

कायाकल्प 1926 में प्रकाशित हुआ । यह उपन्यास उस दौर में लिखा गया जब देश साम्प्रदायिक हिंसा की चपेट में आ गया था । इस उपन्यास का कथानक दो रूपों में सामने आता है। एक

भौतिक और दूसरा आध्यात्मिक । भौतिक प्रक्ष में साम्प्रदायिक समस्या को उठाया गया है। प्रेमचंद ने इस उपन्यास में उन तथ्यों की ओर संकेत किया है जो साम्प्रदायिकता को जन्म देते हैं तथा उसका पोषण करते हैं। आध्यात्मिक पक्ष में आध्यात्मिक चेतना, लोक–परलोक की बात तथा अलौकिक चमत्कार इत्यादि दिखाये गये हैं। इस उपन्यास में गरीबों की दयनीय दशा, दुख, विवशता तथा उन पर होने वाले अत्याचारों का भी चित्रण किया गया है।

निर्मला

'निर्मलाश 1927 में प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास नारी जीवन की करूण दास्तान प्रस्तुत करता है। दहेज प्रथा जैसी सामाजिक कुरीति के परिणामस्वरूप नारी का जीवन त्रासद हो जाता है । दहज प्रथा के परिणामस्वरूप अनमेल विवाह होते हैं। दहेज न दे पाने के कारण वृद्ध के साथ किशोरी की शादी हो जाती है । जहाँ शोकमय लज्जाहीन, यंत्रणापूर्ण जीवन का निर्वाह नारी को करना पडता है। उसके जीवन की स्वाभाविकता नष्ट हो जाती है ।

इस उपन्यास की नायिका निर्मला इसका शिकार बनी है। निर्मला की करूण कहानी कह कर प्रेमचंद ने सामाजिक कुसंस्कारों के प्रति तीखा व्यंग्य किया हैं प्रेमचंद निर्मला की स्थिति का वर्णन इन शब्दों में करते हैं पास बैठने और हंसने–बोलने में संकोच होता था । इसका कदाचित यही कारण था कि अब तक ऐसा ही एक आदमी उसका पिता था, जिसके सामने वह सिर झुकाकर, देह चुराकर निकलती थी, अब उनकी उमर का एक आदमी उसका पति था ष्लेकिन निर्मला को न जाने क्यों तोताराम के उनसे भागती–फिरती, उनको देखते ही उसकी प्रफुल्लता पलायन कर जाती थी ।ष इससे तोताराम को भी कोई खास सुख, शांति अथवा प्रसन्नता नहीं मिली । कुल मिलाकर पूरे परिवार की स्थिति त्रासद हो गयी ।

गबन–

प्रेमचंद का शगबनश उपन्यास 1931 ई. में प्रकाशित हुआ । इस उपन्यास में प्रेमचंद ने निम्न मध्यमवर्ग के झूठे बड़प्पन अर्थात् दिखावा, स्त्रियों की आभूषणप्रियता, विधावाओं की दुर्दशा एवं राष्ट्रीय आन्दोलन के सेनानियों अर्थात देशभक्तों के प्रति ब्रिटिश पुलिस के अत्याचारों का सजीव अंकन किया हैं ।

प्रेमचंद को भारतीय समाज की गहरी समझ थी । मध्यमवर्ग भी उनसे अछूता नहीं था। वे अच्छी तरह जानते थे कि आमदनी अधिक न होने पर भी यह वर्ग दिखावे के लिए खर्च करता है और अनेक विपत्तियों को स्वयं निमंत्रण देता है । उपन्यास में दयानाथ अपने बेटे रमानाथ के विवाह में अपनी हैसियत से अधिक खर्च करता है । रमानाथ भी अपने पिता से कम नहीं है बल्कि इस कार्य में अपने पिता से पांच कदम आगे ही हैं। उसकी पत्नी जालपा में भी आभूषणों के प्रति स्वाभाविक

लगाव है । रमानाथ अपनी पत्नी को प्रसन्न रखने के लिए भ्रष्टाचार का सहारा लेता है । परिणामस्वरूप घोर संकट में फंस जाता है ।

विधवाओं की दुर्दशा की ओर प्रेमचंद ने इस उपन्यास में भी संकेत किया है। रतन को पति की मृत्यु के पश्चात् उचित अधिकार से वंचित कर दिया जाता है । ब्रिटिश पुलिस झूठी गवाही का सहारा लेकर देशभक्तों को फंसाने का प्रयास करती है ।

इस उपन्यास में प्रेमचंद ने पुलिस की काली करतूतों और ब्रिटिश साम्राज्यवाद का पर्दाफाश किया है। प्रेमचंद को सबसे अधिक विश्वास देश के श्रमजीवी वर्ग पर था । उपन्यास का एक चरित्र देवीदीन परोपकार, साहस और निर्भीकता से युक्त है । उसके बच्चे शहीद हो गये लेकिन वह निराश नहीं हुआ बल्कि सत्याग्राही बनना चाहता है। वह क्रांतिकारी देशभक्तों का समर्थन करता है। उसे बड़े लोगों से राष्ट्र उन्नति के कार्य में कोई आशा नहीं हैं। गबन ब्रिटिश कालीन भारतीय परिवेश को उजागर करने वाली एक उत्कृष्ट कृति है ।

कर्मभूमिकृ

‘कर्मभूमिश प्रेमचंद का महत्वपूर्ण उपन्यास है। इसका प्रकाशन 1932 ई. में हुआ। इस उपन्यास में तत्कालीन राजनीतिक आन्दोलन, जमींदारों का शोषण और उनका विरोध, अछूतोद्धार तथा मजदूरों की समस्याएँ आदि के चित्र हैं और उनका समाधान सत्याग्रह के द्वारा दिया गया है ।
शकर्मभूमिश में दलित सवालों को प्रमुखतः के साथ उठाया है। इस उपन्यास में अछूतोद्धार आन्दोलन के दो केन्द्र हैं– शहर और गाँव । नगर में इस आन्दालन की शुरूआत मंदिर प्रवेश के प्रश्न को लेकर होती है। लेकिन धीरे–धीरे यह आर्थिक और राजनीतिक रूप धारण कर लेती है। धार्मिक समानता के प्रश्न को लेकर आरम्भ होने वाला यह लघु आन्दोलन अनुकूल परिस्थितियाँ पाकर व्यापक जन–आन्दोलन का रूप धारण कर लेता है ।

यह मंदिर प्रवेश तक ही समाप्त नहीं हो जाता बल्कि अच्छे मकान और आवास की समस्या मुख्य हो जाती है। शकर्मभूमिश में अछूतोद्धार का दूसरा केन्द्र गंगा के किनारे स्थित रैदास परिवारों का एक छोटा सा गाँव है । उपन्यास का नायक अमरकान्त घर छोड़ने के पश्चात् इसी गाँव में आकर रहता है। वह दलितों में शराब और मुर्दा मांस खाने की प्रथा को बंद कराता है तथा शिक्षा का प्रसार करता है। लेकिन दलितों की असल समस्या आर्थिक है ।

प्रेमचंद ने इस उपन्यास के माध्यम से दलितों की दरिद्रता के ऐसे चित्र खीचें हैं कि हृदय कांप उठे। प्रेमचंद इस उपन्यास मे स्पष्ट कर देते हैं कि शोषण और विषमता, विशुद्ध रूप से मानव कृ त है। ईश्वर या अन्य किसी दैवीय शक्ति का इसमें कोई हाथ नहीं है द्य

इस उपन्यास में प्रेमचंद सामूहिक संघर्ष की ताकत को दर्शाते हैं । जनता के संघर्ष के सामने शोषकों, पूंजीपतियों तथा सरकार का झुकना पड़ता हैं इस उपन्यास में प्रेमचंद ने नारी की सक्रिय सामाजिक भूमिका को भी दर्शाया है कि नारी भी कुशलता के साथ नेतृत्व कर सकती है।

गोदान–

प्रेमचंद का अंतिम एवं सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है । इसका प्रकाशन सन् 1936 में हुआ । इस उपन्यास को तत्कालीन ग्रामीण जीवन की महागाथा कहा जाता है। अगर इस उपन्यास को समग्रता में देखें तो पाते हैं कि इसमें बीसवीं शताब्दी के चौथे दशक के बीच के भारतीय समाज के सजीव चित्र हैं, जिनमें ग्रामीण तथा शहरी जीवन की समस्याओं का विश्लेषण है।

इस उपन्यास का मुख्य कथा क्षेत्र भारतीय गाँव ही है । उपन्यास का नायक होरी पाँच बीघे जमीन का एक साधारण किसान है । धनिया उसकी पत्नी है, एक बेटा गोबर तथा दो पुत्रियाँ – सोना और रूपा हैं। कुल मिलाकर पॉच आदमियों का परिवार है लेकिन मूलभूत सुविधाओं से वंचित है । होरी के मन में बहुत दिनों से गाय पालने की साध है । भोला के माध्यम से उसकी यह साध पूरी होती है। गाय को देखकर सारा परिवार प्रसन्न हो जाता है लेकिन इसके साथ ही लगान एवं ऋण की चिन्ता होरी को लगी रहती है । होरी के दो भाई – शोभा और हीरा है जो होरी के घर गाय आने पर प्रसन्न नहीं है। शीघ्र ही जहर के कारण गाय मर जाती है। गाय के मरने पर पुलिस हीरा के घर की तलाशी लेना चाहती है ।

होरी यह नहीं चाहता कि उसके रहते उसके छोटे भाई की तलाशी ली जाये । वह घूस देकर दरोगा को विदा करना चाहता है । लेकिन धनिया ऐसा होने नहीं देती। इसी बीच गोबर और भोला की विधवा पुत्री झुनिया में प्रेम सम्बन्ध प्रगाढ़ हो जाते हैं और गोबर गर्भवती झुनिया को छोड़कर भाग जाता है । गाँव की पंचायत सामाजिक मर्यादा के नाम पर होरी पर जुर्माना करती है, धनिया इसका विरोध करती है लेकिन होरी कर्ज में दबे होने के बावजूद मरजाद की खातिर जुर्माना अदा करता है । होरी की हालत दिन पर दिन बदतर होती जाती है। दातादीन, झिंगुरीसिंह, पटेश्वरी और नोरवेराम आदि महाजन जोंक की तरह होरी का खून चूसते रहते हैं। शोषण और अन्याय पर आधारित इस व्यवस्था में होरी निरन्तर संघर्ष करने के बावजूद किसान से मजदूर बनने के लिए विवश हो गया । अन्त में करूण अवस्था में मृत्यु को प्राप्त हो जाता है ।

इस मुख्य कथा के साथ–साथ श्गोदानश में एक प्रासंगिक कथा भी है जिसके माध्यम से प्रेमचंद ने शहरी जीवन की समस्याओं, पूंजीपति वर्ग, सामन्ती तत्वों एवं मध्यवर्गीय जीवन से साक्षात्कार कराया है। यह कथा मुख्य कथा से पूर्णता सम्बद्ध है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि प्रेमचंद ने पूरी तल्लीनता के साथ यथार्थ के धरातल पर भारतीय जनजीवन का अंकन किया है।

जयशंकर प्रसाद के उपन्यास

हिंदी साहित्य के प्रख्यात साहित्यकार जयशंकर प्रसाद जी का रचना संसार विस्तृत है। उन्होंने काव्य, उपन्यास, कहानी, नाटक, आलोचना, निबंध, आदि विविध विधाओं मे लेखन कार्य किया है। अनका साहित्य सामाजिक और सांस्कृत परिवेश से जुडा है।

"प्रसाद जन्मजात कवि थे। उनकी साहित्यिक जीवन–यात्रा का आरंभ ब्रजभाषा की समस्या–पूर्तियों से हुआ। उनके प्रारंभिक जीवन की कविताओं मे अतीत की दुःखद स्मृतियां, हल्के विषाद का आवरण तथा श्रृंगार की अतृप्त भावनाओं का आभास मिलता है।"

" बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न जयशंकर प्रसाद ने साहित्य सर्जन की एक लंबी यात्रा तय की है और हिन्दी साहित्य को उत्कृष्ट कोटि की रचनाओं से गौरववन्तित किया है। उनकी उन्मेषशालिनी प्रतिभा ने नौ वर्ष की अल्पवय में ही सुंदर छंद की रचना कर डाली थी। घर मे होनेवाली साहित्यिक गोष्टियों ने प्रसाद के कोमल हृदय में साहित्य रचना का बीज वपन कर दिया था। समस्या पूर्ति से प्रभावित हो उन्होने एक छंद की रचना कर गुरू और प्रसाद को महाकवि बनने का आशीर्वाद दिया । यही से उनके साहित्य जीवन का शुंभारंभ हुआ और उन्होने पदय के साथ–साथ गदय के क्षेत्र मे भी साहित्य की रचना की। वे कवि एवं नाटकाकर पहले थे, गदयकार बाद में अतः सर्वप्रथम उनकी काव्य (रचनाओं का) परिचय अपेक्षित है। उनकी प्रमुख कृतियां है. – चित्राधार (सन १९१८ ई) कानन कुसुम (सन १९३१ ई) झरना (सन १९८१ ई), आँसू (सन १९२३ ई) एवं श्कामायनीश । ५

प्रसाद के श्कानन' — कुसुमश, श्चित्राधारश श्झरनाश मे इन्ही दबी हुई भावनाओं का रूप प्राप्त होता है। आँसू में यह पक्ष उभर कर आया है लेकिन दार्शनिक समाधान के साथ इसमें श्रृंगार की असाधारण मार्मिकता तो है हीय किन्तु दार्शनिक चिन्तन के सुन्दर संयोग ने कृति को महत्वपूर्ण बना दिया है। श्आसूश काव्य के बाद श्रृंगार का उदेग उनके काव्य में नहीं मिलता। पश्चात की कृतियों मे पष्कृति सौदर्य की भावधारा त्रिवेणी के रूप में प्रवाहित होती दिखाई पडती है, वह श्कामायनीश में काव्य, दर्शन और आनन्द के महोदधि में समाहित होती है।

प्रारंभिक (रचनाएँ) प्रसादने ब्रजभाषा मे लिखी किन्तु बाद मे खडीबोली को उन्होने अपनी काव्य रचना का माध्यम बनाया। श्आस्श उनकी प्रसिध्द रचनाओं में से एक है। इस श्रेष्ठ विरहकाव्य में कवि की आत्माभिव्यक्ति है जिसमें मानव हृदय की आकांक्षाओं का चित्रण हुआ है। असीम वेदना से आप्लावित यह कृति विरह जन्य पीडा, दुःख टीस एवं कसक को साकार करती हुई प्रेमानुभूति की तीव्रता को अभिव्यक्त करती है। श्कामायनीश प्रसाद जी की प्रौढतम कृति है जिसमे हृदय तथा बुध्दि, इतिहास तथा कल्पना एवं साहित्य तथा दर्शन का अपूर्व समन्वय हुआ है। पौराणिक ग्रंथो का आधार लेकर कवि ने मानवीय चेतना के विकास की दस कथा में प्रतीकात्मक पात्रयोजना द्वारा मानव जीवन की समस्त वृत्तियों का प्रकाशन करते हुए अंत में आनंदवाद की प्रतिष्ठा की है। प्रकृ

ति का सजीव चित्रण, सौदर्यानुभूति, नारी के प्रति नवीन – दृष्टिकोन, आध्यात्मिक एवं दार्शनिक सूत्रों का संयोजन आदि प्रसाद के कव्या संसार की उल्लेखनीय विशेषताएँ है ।" गदय साहित्य के क्षेत्र में प्रसाद ने नाटकों, कहानियों एवं उपन्यासों की रचना की है।

अमृता प्रीतम के उपन्यास

वतन , कहानियों के आंगन में , अदालत , धरती सागर और सीपियां , नागमणी , देख कबीरा , दीवारों के साये में , खामोशी के आँचल में , एक थी अनिता , प्रसन्न लीला , जेब कतरे , कच्ची सड़क , मनमिर्जातन साहिबा , हरे धागे का रिश्ता , अक्षरों की रासलीला , वर्जितबाग की कथा , पिंजर , मैं तुम्हें फिर मिलूँगी , किसी तारीख को। अमृता प्रीतम के उपन्यास ' पिंजर ' पर 2009 में फिल्म का निर्माण किया गया है।

इस फिल्म में उनके मूल उपन्यास पिंजर की पटकथा से कोई भेद – भाव नहीं किया गया। यह फिल्म कथानक के अनुरूप हिंदुस्तान और पाकिस्तान के बँटवारे पर फिल्मायी गयी। जिसमें एक हिंदू नारी के दर्द और पतिव्रता चरित्र का स्पष्ट चित्रण था। 1975 में कादम्बरी नामक फिल्म उनके उपन्यास ' धरती सागर और सीपियां ' के कथानक पर आधारित थी। इसी तरह उनकी एक कहानी ' उनाह की कहानी ' पर ' डाकू ' नाम की फिल्म का निर्माण 1976 में किया गया।

अमृता प्रीतम के उपन्यास और कहानियों पर बनी फिल्म ने उनकी रचनाओं की लोकप्रियता को और कहानियाँ जो कहानियाँ नही कच्चे रेशम सीलड़ की दीवारों के साये में दो खिड़कियाँ लाल मिर्च सात सौ बीस कदम अमृता प्रीतम की कविताएँ , उपन्यासों , कहानियों में उनके व्यक्तित्व , उनका खुलापन , उनकी संवेदन शील झलक दिखाई देती है , अमृता प्रीतम की कविताएँ जहाँ नारी पीड़ा को उजागर करती हैं , उनके सौंदर्य – बोध को भी दर्शाती है। उनकी रचनाएँ उनकी बेबाक शैली के लिए हमेषा पसंद की जाती रहेंगी।

यशपाल और उनके उपन्यास

प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी साहित्य क्षेत्र में जनवायी कला लेखक के रूप में श्री यशपाल महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उन्होंने प्रेमचन्द की कथा–परम्परा को अपने ढ़ंग से विकसित करने का प्रयास भी किया। वे अपने समय के एक प्रखर जनवादी और प्रखर यथार्थवादी कथाकार माने जाते हैं। यशपाल ने कहानियों के अतिरिक्त उपन्यास, निबन्ध, यात्रा – विवरण, आदि विभिन्न साहित्य–विधाओं के साहित्य का सृजन किया है। हिन्दी साहित्य के मूर्घन्य उपन्यासकारों में उनका उल्लेखनीय स्थान है। उनकी साहित्य–संबन्धी चेतना ही उनकी औपन्यासिक चेतना है। उनके अधिकांश उपन्यास साहित्य सम्बन्धी धारणाओं की कसौटी पर खरा उतरते हैं। यशपाल के उपन्यासों ने मार्क्सवाद को लोकप्रिय बनाया है। अपना पहला उपन्यास दादा कॉमरेड (1941) से लेकर अन्तिम उपन्यास

ष्मेरी–तेरी – उसकीबातष (1974) तक यशपाल एक ही समतल भूमि पर न चले, न विषयवस्तु की दृष्टि से, न कलात्मक चित्रण की दृष्टि से। श्दादा कॉमरेडश का यशपाल अराजकतावादी और रोमानी है। तो श्दिव्याश में वे अराजकता से मार्क्सवाद तक की यात्रा करते हैं। झूठा–सच में वे रोमांस स यथार्थवाद तक की यात्रा करते हैं। यशपाल का अपना अनुभव निम्न धर्म वर्ग का है।

उपन्यासों में व्यक्त होने वाला दृष्टिकोण यशपाल का अपना है, जो उनके निजी जीवन और अनुभवों से निर्मित हुआ है। ष्यशपाल हिन्दी लेखकों में अकेले साहब थे। वे व्यक्तिगत जीवन को कथानक का आधार बना देने से उनके उपन्यासों की विषयवस्तु में एक प्रकार की जीवन्तता मिलती है। उनकी लोकप्रियता का मुख्य कारण भी यही है। यशपाल साहित्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि सामाजिक यथार्थ है। मध्यवर्गीय समाज की समस्याओं की अभिव्यक्ति के लिये उन्होंने सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक कथावस्तु का चयन किया। यही कारण है कि उनके उपन्यासों में जहाँ एक ओर सामाजिक समस्याओं का विश्लेषण है तो दूसरी ओर ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में रचित उपन्यासों इतिहासकार की सूझबूझ और गहनता भी है। यशपाल के उपन्यासरू– यशपाल ने हिन्दी साहित्य को अपनी अनोखी रचना धार्मिता से समृद्ध किया है। उनके बारह उपन्यास प्रकाशित हुए है।

	उपन्यास	प्रकाशन वर्ष
1-	दादा कॉमरेड	सन् 1941
2-	देश द्रोही	सन् 1943
3-	दिव्या	सन् 1945
4-	पार्टी कॉमरेड	सन् 1947
5-	मनुष्य के रूप	सन् 1949
6-	अमिता	सन् 1956
7-	झूठा – सच भाग–1	सन् 1958
8-	झूठा – सच भाग–2	सन् 1960
9-	बारह घंटे	सन् 1963

10- अप्सरा का शाप सन् 1965

11- क्यों फँसे? सन् 1968

12- मेरी–तेरी – उसकी बात सन् 1974

इनमें दादा कॉमरेड़ देशद्रोही, पार्टी कॉमरेड, मनुष्य के रूप, झूठा–सच (दो भाग) और मेरी–तेरी उसकी बात राजनीतिक उपन्यास की कोटि में आते हैं। इन सभी उपन्यासों में मानवतावादी दृ ष्टिकोण दिखाई देते हैं। दादा कॉमरेड रू दादा कॉमरेड यशपाल का प्रथम उपन्यास है। इसमें यशपाल की बदलती राजनैतिक चेतना और प्रेम तथा यौन विषयक परिकल्पनायें परिलक्षित हुई है।

उपन्यास का एक छोर यदि राजनीति से संबद्ध है तो दूसरा छोर प्रेम, काम, विवाह और नारी की सामाजिक स्थिति से। यह उपन्यास बारह छोटे–छोटे अध्यायों में विभक्त है। जिस रोचक ढंग से उपन्यास का ताना–बाना बुना गया है, वह यशपाल की रचनात्मक प्रतिभा का प्रमाण है। इस में गाँधीवाद, क्रान्तिकारियों का प्रभाव, कांग्रेसी संघर्ष, साम्यवाद का प्रभाव, सर्वत्र व्याप्त है। पूरे उपन्यास के मेरुदंड मं अंग्रेजी सत्ता का शोषण, अफ्सरशाही तथा उनके सिपाहियों के आतंक की व्याप्ति दिखाई पडती है। राजनैतिक एवं सामाजिक शक्तियों की पहचान की दृष्टि से दादा कॉमरेड की अपनी एक विशिष्ट भूमिका रही है।

जैनेन्द्र के उपन्यास

जैनेन्द्र कुमार ने बारह उपन्यासों की रचना की है। इकाई के इस भाग में आप जैनेन्द्र के उपन्यासों की विषयवस्तु का अध्ययन करेंगे।

परख **(1929)**

श्परखश जैनेन्द्र कुमार का पहला उपन्यास है जो सन् 1929 में प्रकाशित हुआ । इसमें चार प्रमुख पात्र हैं – सत्यधन, कट्टो, गरिमा, और बिहारी । कट्टो बाल विधवा है । पाँच वर्ष की अवस्था में ही वह विधवा हो जाती है। उस उम्र में उसको विधवा होने का अर्थ भी मालूम नहीं था। विधवा होने के बाद कट्टो न तो किसी और से विवाह कर सकती है और न किसी से प्रेम कर सकती है। समाज की दृष्टि में वह यह अधिकार खो चुकी है। कट्टो समाज की इस मान्यता का विरोध करती है। कट्टो के जीवन में दो युवक आते हैं– आदर्शवादी श्सत्यधनश और व्यावहारिक श्बिहारीश । यह दोनों मित्र हैं। दोनों कट्टो को पढ़ाना चाहते हैं। सत्यधन इस बालविधवा कट्टो को पढ़ाने लगता है ।

कट्टो सत्यधन के आदर्शवाद से प्रभावित होती है और उससे प्रेम करने लगती है। सत्यधन भी कट्टो के प्रति आकर्षण महसूस करता है। बीच में एक पात्र गरिमा आती है जो बिहारी की बहन है। सत्यधन का विवाह गरिमा के साथ होने वाला है । यह जानकर कट्टो अपने विवाह के लिए खरीदी गयी सिंदूर की डिबिया और दर्पण गरिमा को भेंट कर देतो है और सत्यधन के जीवन से हट जाती है। अब गरिमा और सत्यधन का विवाह हो जाता है । आगे चलकर वह और भी त्याग की देवी बन जाती है जब अपनी ससुराल से मिली हुई सारी सम्पत्ति वह सत्यधन को दे देती है। हालाँकि सत्यधन जब कट्टो का दिल तोड़ता है तब कट्टो को एहसास होता है कि अब वह सच्चे रूप में विधवा हो गयी है।

इससे पूर्व उसे इस तथ्य का एहसास नहीं होता। हालाँकि उसका मन अब भी सत्यधन के लिए संवेदनशील है। आगे चलकर कट्टो का विवाह बिहारी से हो जाता है। लेकिन यह सामाजिक विवाह नहीं होता, आध्यात्मिक लोक का विवाह होता ह। वह विवाह करने के पश्चात कहती है कि ष्आज मेरा विवाह पूर्ण हुआ, वैधव्य सार्थक हुआ ।" उपन्यास का यह अंत कट्टो के जीवन की पीड़ा को अभिव्यक्त करता है, लेकिन इसमें लेखक कही भी विधवा विवाह का समर्थन नहीं करता। विधवा को विधवा ही रहने देता है । उपन्यास के इस निष्कर्ष के कारण यह जैनेन्द्र का साधारण उपन्यास ही माना गया। हालाँकि इसमें विकसित होने की असीम संभावना थी ।

सुनीता (**1935** ई.)

श्सुनीताश उपन्यास में तीन प्रमुख पात्र हैं– सुनीता, उसका पति श्रीकांत और श्रीकांत का अत्यंत आत्मीय मित्र हरिप्रसन्न । तीनों एक दूसरे से बहुत प्रेम करते हैं । उपन्यास के केंद्र में सुनीता है जो इन दोनों पात्रों को जोड़ती है। सुनीता के पति को लगता है कि उसका मित्र हरिप्रसन्न अपने जीवन में प्रसन्न नहीं है । वह कुंठित और अव्यवस्थित है। इसी कुंठा के कारण वह क्रांतिकारी बना रहता है। वह दरअसल क्रांतिकारी नहीं है। तब श्रीकांत इस प्रयास में लगता है कि हरिप्रसन्न को कुंठा से मुक्त किया जाए। उसको लगता है कि वह अकेला यह काम नहीं कर सकता। इसलिए वह अपनी पत्नी सुनीता की मदद लेना चाहता है। हरिप्रसन्न श्रीकांत के घर जब आता है तो अपने मित्र की पत्नी सुनीता के प्रति आकर्षित होता है।

श्रीकांत अपनी पत्नी को कहता है कि वह हरिप्रसन्न को हर तरह से प्रसन्न रखने का प्रयास करे। यह संकेत सुनीता की समझ में आ जाता है। सुनीता के प्रति हरिप्रसन्न के मन का यह आकर्षण आसक्ति तक पहुँच जाता है। इस बीच में श्रीकांत योजना के तहत कचहरी के काम का बहाना बनाकर कानपुर चला जाता है ताकि उसकी अनुपस्थिति में सुनीता और हरिप्रसन्न का सम्बन्ध प्रगाढ़ हो सके। इधर सुनीता चाहती है कि हरिप्रसन्न उसकी छोटी बहन के प्रति आकर्षित हो जाए, लेकिन हरिप्रसन्न उसमे रुचि नहीं लेता। अंत में हरिप्रसन्न आधी रात को सुनीता को जंगल में ले जाता है, जहाँ वह अपने क्रांतिकारी मित्रों से मिलने वाला है तथा सुनीता को उस दल में

शामिल करवाना चाहता है। वह काम के वशीभूत होकर सुनीता को सम्पूर्णता में प्राप्त करने की इच्छा जाहिर करता है।

सुनीता तो इसके लिए तैयार ही थी । वह उसके सामने निर्वस्त्र हो जाती है। नारी के इस तेजस्वी रूप को देख कर हरिप्रसन्न भाग खड़ा होता है। सुनीता को घर पहुँचाकर वह चला जाता है। उसकी मानसिक गाँठ निकल चुकी है। सुनीता वापस घर आकर पूर्ववत् अपनी गृहस्थी में रम जाती है। उसके मन में कोई अपराध बोध नहीं है क्योंकि उसने जो कुछ किया है वह अपने पति की इच्छा के अनुरूप किया है। अतः पति–पत्नी का रिश्ता पुनः सामान्य हों जाता है। यहाँ यह भी स्पष्ट होता है कि जिन्हें क्रांतिकारी कहते हैं वे दरअसल ष्कुंठित, टुटा हुआ और कमजोरष चरित्र है । वह सहज नहीं है। इस तरह सुनीता में भी विद्रोह की मानसिकता के बीच सात्विक प्रेम का जीवन स्थापित हो जाता है।

त्याग – पत्र **(1938)**

श्त्याग–पत्र जैनेन्द्र का अत्यंत चर्चित और प्रशंसित उपन्यास है। इसका देश–विदेश की अनेक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। इसकी प्रमुख पात्र मृणाल है। उपन्यास में मृणाल के दुःख –दर्द का वर्णन उसका भतीजा करता है। उसका नाम प्रमोद है। वह अपनी बुआ को बहुत चाहता है । मृणाल किशोरावस्था में अपनी सहेली के भाई से प्रेम श्त्याग–पत्रश और श्मानस का हंस कर बैठती है। इसकी जानकारी जब उसकी भाभी को होती है तो वह मृणाल की पिटाई करती है। फिर उसका भाई उसकी अधेड़ उम्र के व्यक्ति से शादी कर देते हैं।

मृणाल को लगता है कि पति तो परमेश्वर है, इसलिए वह अपने पति को अपने विवाह से पूर्व प्रेम की सारी कथा बता देती है। पति को यह बात बर्दाश्त नहीं होती और वह उसे मार पीटकर घर से निकाल देता है। पति के घर से निकाली जाने के बाद मृणाल भटकती हुई एक कोयले वाले के पास जाती है। जहाँ उसे अपना शरीर सौंपना पड़ता है। अंत में वह बहुत दीन–हीन अवस्था में जीवन जीती है। उसका भतीजा उससे मिलने आता है। वह अपनी बुआ को अपने साथ ले जाना चाहता है, परन्तु बुआ उसे इसलिए मना कर देती है कि कहीं मृणाल के कारण प्रमोद को कोई परेशानी उठानी न पड़े। इस उपन्यास पर अगली इकाई में आप विस्तार से अध्ययन करेंगे। अतः इस इकाई में उसकी कथा के सार–संक्षेप की जानकारी ही पर्याप्त होगी ।

कल्याणी **(1939)**

यह भी आजादी से पूर्व का उपन्यास है। इसकी रचना ष्गोदानष के प्रकाशन के बाद सन् 1939 में हुई। जैनेन्द्र के अन्य उपन्यासों की तरह यह भी मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। इसकी केंद्रीय पात्र कल्याणी है। कल्याणी के अलावा एक उपन्यास का कथावाचक है । कल्याणी का पति डॉ. असरानी

है। यह भी आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है । कल्याणी शिक्षित नारी है। वह विदेश में जाकर वहाँ से शिक्षा प्राप्त करके और डॉक्टर बनकर लौटी है। विदेश में रहते हुए कल्याणी का एक व्यक्ति से प्रेम हो जाता है ।

कल्याणी के भारत लौट आने के बाद उसका वह प्रेम, विवाह में परिणत नहीं हो पाता। यहाँ आने पर उसका विवाह डॉ. असरानी से हो जाता है। असरानी लोभी प्रकृति का व्यक्ति है । कल्याणी उस व्यक्ति को पसंद नहीं करती। इस कारण पारिवारिक स्तर पर वह तनावपूर्ण जीवन जीती है। इस विवाह से उसकी नारी भावना कुंठित हो जाती है। उसके सपने बिखर जाते हैं और वह अस्थायी तनाव में अपना जीवन बिताती है। लोभी के अलावा डॉ. असरानी पारम्परिक भारतीय मानसिकता का पुरुष है, जो नहीं चाहता कि उसकी पत्नी किसी अन्य पुरुष से किसी तरह का संवाद भी रखे ।

कल्याणी को लगता है कि विवाह में स्त्री, पत्नी बन जाती है। अर्थात् उसका अस्तित्व पति पर निर्भर हो जाता है। वह अब स्त्री नहीं है, पत्नी है। विवाह से पूर्व तो वह श्कन्याश है। भारतीय समाज में स्त्री का तो कोई अस्तित्व ही नहीं है। कल्याणी बहुत सरल स्त्री है । उसको लगता है कि शादी या डॉक्टरी में से किसी एक को ही वह चुन सकती है या तो वह अपनी शादी को सँभाले या डॉक्टर का कर्तव्य निभाए। दोनों भूमिकाओं में रहना कल्याणी को मुश्किल लगता है। यदि कोई उसके लिए यह चुनाव कर दे कि दोनों में से उसे कौन सी भूमिका निभानी है तो वह आराम से उसे निभा सकती है। इस कशमकश और द्वंद्व में वह टूट जाती है । वह कोई भी भूमिका ठीक से सँभाल नहीं पाती। अंततः इसी पीड़ा में उसकी मृत्यु हो जाती है। इस करुण निष्कर्ष पर उपन्यास समाप्त हो जाता है ।

निष्कर्ष

हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपन्यास लिखते हैं। इससे भाषाई समृद्धि होती है और साहित्यिक रचनाओं की विभिन्न परंपराओं को मिलाने का मौका मिलता है। यह एक सामरिक विकास है जो भारतीय साहित्य को विश्व साहित्य के साथ मेलजोल प्रदान करता है। अंततः, आधुनिक युग में हिन्दी और अंग्रेजी के उपन्यासों का इतिहास एक योगदान है जो हमें सामाजिक, मानसिक, और सांस्कृतिक परिवर्तनों को समझने में मदद करता है।

संदर्भ

1. शोरर: (1952) श्क्रिटिक्स एंड एसेज ऑन मॉडर्न फिक्शनश, 1920–1951 संस्करण। जॉन ए. एल्ड्रिज (न्यूयॉकर्रू ह्यूमैनिटीज प्रेस), पी.68.

2. राव रिशा: (1979)_द इंडो–एंग्लियन नॉवेल एंड द चेंजिंग

3. स्पेंसर डोरोथी: श्इंडियन फिक्शन इन इंग्लिशश, ऑप.सी.टी.पी.25.

4. कृपलानी कृष्णा: श्मॉडर्न इंडियन लिटरेचरश, पी.79. च्चक्डमीजतं द्वारा उद्धृतरू व्च.ब्पज, च 98।

5. असनानी श्याम एम.: (1985)श्क्रिटिकल रिस्पांस टू इंडियन इंग्लिश फिक्शनश, 143. (दिल्ली: मित्तल प्रकाशन,) पी.1.

6. डाइटर रिमेंशनेडर: (1988) श्द इंडो–इंग्लिश नॉवेलश, कॉमनवेल्थ फिक्शन आर.के. धवन द्वारा संपादित (नई दिल्ली: क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी,) पी.50।

7. सहगल नयनतारारू (1971)श्द इंडियन राइटर एंड द इंग्लिश लैंग्वेजश, श्द स्टेट्समैनश 9 मई (रविवार संस्करण), पी.5

8. ताइन हिप्पो–अडोल्फे :(1976) श्फ्रॉम द इंट्रोडक्शन टू द हिस्ट्री ऑफ इंग्लिश लिटरेचरश इन ट्वेंटिएथ सेंचुरी क्रिटिसिज्मश, द मेजर स्टेटमेंट्स एड। विलियम जे. हैंडी और मैक्स वेस्टब्रूक, (नई दिल्ली: लाइट एंड लाइफ पब्लिशर्स,) पी.309।

9. एलन वाल्टर: (1999)श्रीडिंग ए नॉवेलश, पी.18–19। के. का हवाला दिया।

10. वेंकटरेड्डी और पी. बायापारेड्डीरू श्इंडियन नॉवेल विद ए सोशल पर्पसश, (नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स), पी.7

11. राव राजा: (1968) श्द सर्पेंट एंड द रोपश, (दिल्ली: हिंद पॉकेट बुक्स), पृष्ठ 130।

12. राव पी. मल्लिकार्जुन, एम. राजेश्वर: (1999) श्इंडियन फिक्शन इन इंग्लिशश, (नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स,) पी.96।

13. अयंगर के.आर.एस.: (1985) श्इंडियन राइटिंग इन इंग्लिशश,

14. राव राजा: (1968)श्द सर्पेंट एंड द रोपश,

15. (दिल्ली: हिंद पॉकेट बुक्स), पृ.50.

16. दयाल पी. : (1991) श्राजा राव ए स्टडी ऑफ हिज नॉवेल्सश,

17. (नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स,) पी.141।

18. अप्पास्वामी एस.पी., सी.डी. गोविंदा राव: (1979) ष्भारतीय गद्य से प्रतिनिधि चयनष, (मद्रास: मैकमिलन इंडिया प्रेस), पी.107।

19. कृपलानी कृष्णा: (1982) श्मॉडर्न इंडियन लिटरेचरश, पी.109 केके शर्मा द्वारा उद्धृत श्इंडियन इंग्लिश लिटरेचरश (गाजियाबाद: विमल प्रकाशन),

20. मेहता पी.पी. : (1979) ष्इंडो–एंग्लियन फिक्शनष, एन असेसमेंट, (बरेली: पीबीडी) पी.266।